❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3

सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।

O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 42, अंक 18 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 मार्च, 2019 से रविवार 24 मार्च, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारत के राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द जी द्वारा राष्ट्रपति भवन में सर्वोच्च नागरिक सम्मान वितरण

आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी पद्मभूषण सम्मान से विभूषित

सम्पूर्ण भारत की आर्य संस्थाओं की ओर से बधाई एवं शुभकानाएं : विदेशों से भी प्राप्त हो रहे हैं शुभकामना सन्देश

16 मार्च 2019 दिन शनिवार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य भक्त महाशय धर्मपाल गुलाटी जी को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द ने पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित करना आर्य समाज के लिए एक गौरवान्वित करने वाला दिन रहा। आपका जीवन संघर्ष, सफलता और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति समर्पण सदा हम सभी को प्रेरित करता रहेगा। एक आदर्श व्यापारी के गुणों को सही अर्थों में चरितार्थ करने वाले, अनेकों गुरुकुलों विद्यालयों के पोषक, समाज सेवा को समर्पित अनेकों अन्य संस्थान चाहें इसमें चिकित्सा से जुड़ें हो या मानव सेवा के कार्यों को इसमें आप सर्वथा अग्रणी रहे है।

यह लिखते हुए हर्ष हो रहा है तथा आपको शुभकामनाये देते हुए आपके दीर्घायु व अच्छे स्वास्थ्य की कामना कर रहे है कि जिस तरह आपने अपने जीवन में मूल्यों और सिद्धांतो पर दृढ रहते हुए सफलता के आसमान को छुआ ऐसे उदाहरण संसार में विरले ही देखने सुनने को मिलते है।

1959 में एमडीएच फैक्ट्री की नींव रखी जो आज करीब 1,000 डीलरों को मसाला सप्लाई करने के साथ 100 देशों से निर्यात भी करती है। इतने बड़े कारोबार और व्यस्तता के बावजूद आप हमेशा ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में तन-मन-धन से जो सहयोग कर रहे है वह भी अपने आप में अतुलनीय एवं महान कार्य है।

धन का संग्रह तो अनेकों लोग व्यापारी बन कर लेते है किन्तु उसका उपयोग मानव सेवा और समाज सुधार के कार्यों में करना महान उपकार से कम नहीं है। आपकी दानी प्रवृति के कारण ही आज आर्य समाज

- शेष पृष्ठ 4 पर

माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द जी से पद्मभूषण सम्मान प्राप्त करते आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के सहयोग से

17वां आर्य परिवार

होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न

आर्यजनों ने एक स्वर में सभी सरकारी दस्तावेजों - बैंकों आदि में अपने हस्ताक्षर हिन्दी में ही करने का लिया संकल्प

विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी आगामी अंकों में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

बुधवार 26 मार्च, 2019 सायं : 4 बजे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **बुधवार 26 मार्च, 2019** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 4:00 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय अधिकारियों, सदस्यों, विशेष आमन्त्रित सदस्यों एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माननीय प्रधान एवं मन्त्री महोदयों को बैठक का ऐजेण्डा विधिवत् भेजा गया है।

बैठक से पूर्व सभी अधिकारी एवं सदस्यगण पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के 96वें जन्मदिवस - पद्माभूषण महोत्सव तालकटोरा स्टेडियम नई दिल्ली में पधारकर उन्हें दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन के लिए शुभकामनाएं देंगे।

अतः सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

- प्रकाश आर्य, सभामन्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

वेद-स्वाध्याय

पतित-दलितोद्धार, महान् कर्त्तव्य

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः।।अथर्व. - 4/13/1
ऋषिः भरद्वाजः।। देवता - विश्वेदेवाः।। छन्दः अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - देवाः = हे देवो! **देवाः** = तुम देव **अवहितम्** = नीचे पड़े हुए, पतित को **उत** = भी **पुनः** = फिर **उन्नयथाः** = उन्नत कर देते हो, उठा लेते हो और **देवाः** = देवो! **देवाः** = तुम देव **आगः चक्रुषम्** = पाप करनेवाले को, पापी को उत भी **पुनः** = फिर **जीवयथा** = जिन्दा कर देते हो, जीवन दे देते हो।

विनय - हे देवो! तुम्हारे इस संसार में कोई भी मनुष्य सदा के लिए पतित नहीं हो जाता, कोई मनुष्य सदा के लिए मर भी नहीं जाता। पतित-से-पतित मनुष्य इस संसार में फिर से, जब चाहे तब उन्नत हो सकता है। मरे हुए मनुष्य को भी, हे देवो! तुम फिर जिला देते हो, पापी-से-पापी पुरुष भी तुम्हारा सहारा पाकर फिर पूरा पुण्यात्मा हो जाता है। प्रायः पतित होकर हम लोग निराश हो जाया करते हैं, समझने लगते हैं कि अब तो हमारा उद्धार किसी तरह नहीं हो सकता, परन्तु हे देवो! तुम तो देव हो! तुम बड़े भारी ज्ञान-प्रकाश और शक्ति से युक्त हो। तुम्हारे रहते हम कैसे फिर उन्नत न हो सकेंगे? हे परोपकार के लिए ही जीवन धारण करनेवाले श्रेष्ठ जनो! हे पतितों को उठानेवाले महात्माजनो! हे करुणापरायण मेरे गुरुजनों! तुम देव हो। तुम्हारी कृपा में बड़ी अद्भुत शक्ति है। तुमने न जाने कितने पतितों को उबारा है, न जाने कितने डूबतों को बचाया है, प्राण निकलते-निकलते आ बचाया है, जघन्य पापियों को अन्तिम क्षण में पुण्य जीवन की ओर फेर लिया है। मरकर तो सभी जीव पुनर्जन्म पाते हैं, किन्तु असल में मरना तो पापी होना ही है। यदि अमर आत्मा किसी तरह मरता है, तो वह पाप-अपराध करने से ही मरता है, परन्तु हे देवो! तुम इस अत्यन्त विकट आत्मिक मौत से भी उबार लेनेवाले हो, फिर से पुण्य जीवन का संचार कर देनेवाले हो। तब हम तुम्हारे होते क्यों निराश हों? हतोत्साह होकर क्यों हाथ-पैर मारने छोड़ दें? क्यों न तुम्हारी जीवनदायी शरण का आश्रय लें? हे देवो! हमें पूरा-पूरा विश्वास है कि तुम शरण पड़े हम पतितों को अवश्य ही ऊपर उठा लोगे? हम मरे हुओं को अवश्य ही फिर जीवित कर दोगे।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या मोबाइल तय कर रहे हैं बच्चों की दिशा?

..... अक्सर जब बच्चे मोबाइल पर गेम खेलते हैं, हम यह सोचकर खुश होते है कि चलो कुछ देर उसे खेलने भी दिया जाना चाहिए। लेकिन वह खेल नहीं रहा है, ध्यान से देखिये वह सिर्फ बैठा है और उसके दिमाग से कोई और खेल रहा है, उसका चेहरा देखिये कई बार वह हिंसक होगा कई बार अवसाद में जायेगा। कई बार जब उसके पास मोबाइल नहीं होगा तो वह परिवार के बीच रहते हुए भी खुद को अकेला महसूस करेगा। वह एक अनोखे संसार में जीने लगता है। माता-पिता से ज्यादा गेम के पात्र उसके हीरो हो जाते हैं। जब किसी कारण परिवार के लोग उसे इससे दूर करते हैं तो वह हिंसक हो जाता है। घर का जरुरी सामान तोड़ने-फोड़ने के अलावा कई बार खुद के साथ अन्य के साथ हिंसा भी कर बैठता है। .....

कुछ समय पहले यानि दिसम्बर 2017 में दिल्ली से सटे गौतम बुद्ध नगर के ग्रेटर नोएडा में एक 15 वर्ष के बच्चे ने एक ही रात में दो कत्ल किए थे। एक कत्ल अपनी सगी माँ का और दूसरा अपनी सगी बहन का। ये दोनों कत्ल बच्चे ने क्रिकेट बैट पीट-पीट कर किये थे। कत्ल करने की वजह क्राइम फाइटर गेम को बताया गया था। क्योंकि बहन ने शिकायत कर दी थी कि भाई दिन भर मोबाइल फोन पर गेम खेलता रहता है और इसलिए माँ ने बेटे की पिटाई की, उसे डाँटा और उसका मोबाइल फोन छीन लिया था।

यह घटना भी दुनिया भर में तबाही मचाने वाले ब्लू व्हेल गेम के कारण की गयी सैंकड़ो आत्महत्याओं से अलग नहीं थी पर यह मामला ज्यादा खतरनाक इसलिए बना क्योंकि इस मामले में आत्महत्या के बजाय दोहरा हत्याकांड हुआ था। इन सभी घटनाओं के बाद यह सवाल उठने लाजिमी थे कि आखिर बच्चों को किस उम्र में मोबाइल फोन दिए जायें?

असल में लाड़-प्यार या जरुरत के चलते परिवारों में बच्चों को मोबाइल देना अब कोई बड़ी बात नहीं है। दूसरा अक्सर बच्चे भी यह भी कहकर मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते हैं कि उसे पढ़ाई के लिए इसकी जरुरत है। पर इसमें सबसे बड़ा नुकसान तो यह होता है कि बच्चे पूरी तरह मोबाइल पर निर्भर हो जाते हैं। कारण जब बच्चा मोबाइल का इस्तेमाल अपनी पढ़ाई के लिए भी कर रहा होता है तब यह नुकसान होता है कि जिस उत्तर को खोजने के लिए उसे पुस्तक का पाठ पढ़ना चाहिए वह काम उसका झट से गूगल पर हो जाता है इसलिए बच्चे पुस्तकों को पढ़ना कम कर देते हैं। बच्चे उस उत्तर को याद भी नहीं रखते क्योंकि उन्हें लगने लगता है कि जब उसे इस उत्तर की जरूरत महसूस होगी वे दुबारा गूगल को क्लिक कर लेंगे।

हालाँकि आजकल अनेकों आधुनिक स्कूलों में शिक्षक क्लासरूम में आधुनिक तकनीक को अपना रहे हैं, लेकिन कई अध्ययनों से पता चला है कि पारंपरिक तरीका ही माध्यमिक शिक्षा में अधिक कामयाब हो सकता हैं। बावजूद इसके धीरे-धीरे एक नई आधुनिक शिक्षा विधि का निर्माण किया जा रहा हैं और इस कारण आज व्याख्यान के जरिए पढ़ाना एक अवशेष की तरह होता जा रहा है। शायद अगले कुछ वर्षों में यह तरीका डायनासोर की तरह विलुप्त हो जाएगा।

उदाहरण हेतु लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के 2015 के एक अध्ययन ने दिखाया था कि जब ब्रिटेन के कई स्कूलों ने क्लासरूम में फोन पर पाबंदी लगा दी तो बच्चो में अनोखा बौद्धिक सुधार हो गया था। इसे भारतीय तरीके से कुछ यूँ समझे कि अब से पहले जोड़-घटा, गुणा या भाग बच्चों को उँगलियों पर सिखाया जाता था इससे उनकी स्मरण शक्ति मजबूत होती थी। किन्तु आज बच्चे फटाफट मोबाइल में कैल्कुलेटर का इस्तेमाल कर रहे है उन्हें अपना दिमाग लगाने की जरूरत नहीं पड़ती इससे भी उनकी स्मरण शक्ति का ह्रास हो रहा है।

वैसे देखा जाये तो जैसे-जैसे आज सूचना सर्वव्यापी हो रही है, वैसे-वैसे आज बच्चों की सफलता मोबाइल पर निर्भर हो रही हैं। इससे उनकी रचनात्मकता के साथ सोचने की क्षमता को हानि तो हो ही रही है साथ ही वे लगातार एक विचलित करने वाली दुनिया में प्रवेश कर रहे है। पहले बच्चा खेलता था। माँ बीस दफा उसे कह देती थी आराम से खेलना चोट मत खा लेना। किन्तु आज वह जब मोबाइल पर गेम खेलता है, मोबाइल में उन्हें कोई रोकने वाला, डांटने वाला नहीं है एक किस्म से वह इसमें स्वतंत्रता महसूस कर रहा है।

अक्सर जब बच्चे मोबाइल पर गेम खेलते हैं, हम यह सोचकर खुश होते है कि चलो कुछ देर उसे खेलने भी दिया जाना चाहिए। लेकिन वह खेल नहीं रहा है, ध्यान से देखिये वह सिर्फ बैठा है और उसके दिमाग से कोई और खेल रहा है, उसका चेहरा देखिये कई बार वह हिंसक होगा कई बार अवसाद में जायेगा। कई बार जब उसके पास मोबाइल नहीं होगा तो वह परिवार के बीच रहते हुए भी खुद को अकेला महसूस करेगा। वह एक अनोखे संसार में जीने लगता है। माता-पिता से ज्यादा गेम के पात्र उसके हीरो हो जाते हैं। जब किसी कारण परिवार के लोग उसे इससे दूर करते हैं तो वह हिंसक हो जाता है। घर का जरुरी सामान तोड़ने-फोड़ने के अलावा कई बार खुद के साथ अन्य के साथ हिंसा भी कर बैठता है।

बात सिर्फ बच्चों के बौद्धिक विकास और हिंसा तक सीमित नहीं है, यदि इससे आगे देखें तो आज इंटरनेट पर हर तरह की सामग्री उपलब्ध है। जो बात या थ्यौरी उसे अपनी उम्र के पड़ाव के बाद मिलनी चाहिए थी वह उसे बेहद कम उम्र में मिल रही है। कौन भूला होगा नवम्बर 2017 की उस खबर को जो समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठों पर छपी थी कि "दिल्ली में साढ़े चार साल के बच्चे पर साथ पढ़ने वाली बच्ची के रेप का आरोप" आखिर एक बच्चे के पास यह जानकारी या कामुकता कहाँ से आ रही है? हो सकता है मोबाइल फोन पर कोई क्लिप आदि देख कर वह लड़का प्रेरित हुआ होगा!

असल में आज हमें ही सोचना होगा और बदलाव भी स्वयं के घर से शुरू करना होगा। बच्चों के सामने कम से कम मोबाइल का इस्तेमाल करें, उनके साथ पढाई की बात करें। बच्चों का घर के दैनिक कार्यों कुछ में कुछ ना कुछ योगदान जरुर लें ताकि वह जिम्मेदारी महसूस कर सकें। इससे उन्हें कई चीजों के महत्व का पता चलेगा। उनके साथ खेलें, इससे उनका शारीरिक विकास होगा और थकान के साथ अच्छी नींद भी आएगी। क्योंकि जब उसका ध्यान मोबाइल फोन में ज्यादा रहता है तो वह अनिंद्रा का शिकार भी हो जाता है। मौलिक रूप से बच्चो को शिक्षा से लेकर सभी स्तरों पर यदि कामयाब करना है तो उसे लगातार विचलित करने वाली इस मोबाइल फोन की दुनिया से उम्र की एक अवधि तक दूर रखना होगा। वरना भले ही बच्चा आपका हो किन्तु उसकी दिशा कोई और अपने ढंग से तय कर रहा होगा आपके ढंग से नहीं।

- सम्पादक

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के 65 वे वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय वेद सम्मेलन सम्पन्न

वेद प्रचार मंडल का ध्येय सफल हुआ। अपने 65 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य को आधार बनाकर राष्ट्रीय वेद सम्मेलन 9 और 10 मार्च 2019 को मालवीय नगर आर्य समाज में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा किया गया, जिसमें 38 धार्मिक विद्वान वक्ताओं के उदबोधन हुए जिनके विषय प्रथम सत्र 9 मार्च को – 'महर्षि दयानन्द जी के वेद भाष्य में सामाजिक चिन्तन' एवं सुना। गौमत (अलीगढ़) से स्वामी श्रद्धानन्द जी, आचार्य देवव्रत (स्वामी जी) और स्वामी प्रणवानन्द जी के वैदिक विचार और आशिर्वाद भी प्राप्त हुए।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की उपस्थिति और अध्यक्षता ने कार्यक्रम को चार चाँद लगा दिए। जिसका सब लोगों पर अच्छा असर पड़ता है। उन्होंने कहा व्यक्ति बड़ों की दानशीलता से प्रभावित होते हैं। वेद प्रचार से ही आज के समाज

वेद सम्मेलन में पधारने पर पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी को वेद भगवान (वेद सैट) भेंट कर सम्मानित करते स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी जी एवं अन्य महानुभाव।

'पारिवारिक जीवन की समस्याओं का वैदिक समाधान' तथा दितीय सत्र 10 मार्च को 'वैदिक व्यवस्था में प्रचलित जाति मुक्त समाज का चिन्तन' एवं 'बच्चों में बढती अपराध प्रवृत्ति का वैदिक समाधान' थे।

जनसमूह ने मन लगाकर धैर्यपूवक का उद्धार सम्भव है। मुझे आशा है इससे भविष्य में आर्यों और समाज से इतर आने वाले श्रोताओं की रूचि वेद की ओर अग्रसर होगी। दिल्ली सरकार और मंडल के सहयोग से कवि सम्राट मोहन मनीषी के संचालन में कवि सम्मेलन 9 मार्च सायं 7 बजे से रात्रि 11 वजे तक एक शाम पुलवामा के शहीदों के नाम हुआ।

– चतर सिंह नागर, महामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर 31 मई से 9 जून, 2019 तक महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली अजमेर में लगाया जाएगा। शिविर में कन्याओं को शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार में अहम् भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जाएगा। शिक्षिका, सह शिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगाई जाएंगी। परीक्षा में उत्तीर्ण आर्य वीरांगनाओं का प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।

–साध्वी डॉ. उत्तमायति
प्रधान संचालिका, 9672286863

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में

नि:शुल्क योग, आसन शिविर एवं ऋग्वेद यज्ञ

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ हरियाणा में स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के सान्धिय में नि:शुल्क योग एवं आसन व्यायाम प्राणायाम स्वास्थ्य सुधार शिविर एवं ऋग्वेद बृहद् यज्ञ का आयोजन 25 से 31 मार्च तक आयोजित किया जा रहा है। योग प्रशिक्षक एवं यज्ञ ब्रह्मा स्वामी विदेह योगी होंगे। प्रवचन स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, आचार्य चांद सिंह आर्य, स्वामी सच्चिदानन्द जी एवं भजनोपदेश पं. राजचन्द्र जी वैदिक, लक्ष्मण प्रसाद एवं श्री रामानन्द जी के होंगे। *– संयोजक*

ब्रेल लिपि में महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/–रु

ब्रेल लिपि में सत्यार्थ प्रकाश

मात्र 2000/–रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

–: प्राप्ति स्थान :–
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

विदेश सेवा हेतु पुरोहित/धर्माचार्य चाहिए

विदेशों में प्रचार हेतु ऐसे सुयोग्य पुरोहित/धर्माचार्यों की आवश्यकता है जो हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत पर समान अधिकार रखतें हों और समस्त संस्कार वैदिक रीति के अनुसार कराने में निपुणता रखते हों। गुरुकुल से आर्ष पाठविधि से शिक्षा प्राप्त अनुभवी महानुभावों को वरीयता। इच्छुक अभ्यर्थी अपना विस्तृत बायोडाटा, पासपोर्ट एवं शैक्षणिक योग्यता की प्रतियों के साथ aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। *– महामन्त्री*

आर्यसमाज बी.एन.पूर्वी शालीमार बाग का 39वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बी.एन. पूर्वी शालीमार बाग, नई दिल्ली का 39वां वार्षिकोत्सव समारोह 27 मार्च से 31 मार्च, 2019 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर वैदिक विद्वान डॉ. धर्मेन्द्र जी शास्त्री के प्रवचन तथा पं. भानुप्रकाश शास्त्री जी के भजन होंगे। इस अवसर पर 29 मार्च को आर्य महिला सम्मेलन, नारी जागृति सम्मेलन होंगे। यज्ञ पूर्णाहुति तथा नए भवन का उद्घाटन 31 मार्च को पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के कर-कमलों से किया जाएगा।

– नरेन्द्र अरोड़ा, मन्त्री

आर्यसमाज न्यू पालम विहार, गुरुग्राम का

10वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज न्यू पालम विहार गुरुग्राम का 10वां वार्षिकोत्सव समारोह 5 से 7 अप्रैल, 2019 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य कुलश्रेष्ठ जी के प्रवचन एवं श्री अशोक प्रबोध व श्रीमती उषा आर्या जी के भजन होंगे।

– राजेश आर्य, मन्त्री

MUTUAL FUNDS/SIP, INSURANCE, MEDICLAIM, BONDS, PSM, NPS, F.D., TAX SAVING,

आदि के लिए सम्पर्क करें –
धर्मवीर आर्य, 9810216281

विज्ञापन

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज दयानन्द विहार, दिल्ली –110092 को एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। इसमें दिल्ली में कालेज के विद्यार्थी एवं सेवानिवृत्त व्यक्ति भी आवेदन कर सकते है। गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षित व्यक्तिओं को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव अपनी योग्यता प्रमाण पत्रों की प्रति/आयु/पासपोर्ट आकार के दो फोटो/आधार कार्ड की प्रति आवेदन पत्र के साथ प्रधान आर्यसमाज के नाम स्पीड पोस्ट भेजें या asdv92@yahoo.com पर ईमेल करें।

– मन्त्री, 9911160975

प्रेरक प्रसंग

वे दिलजले आर्यवीर

गतांक से आगे –

इन वीरों के बलिदान के समय छपी एक पुस्तक में यह छपा था। वह पुस्तक विदेशी शासन ने जब्त कर ली थी।

वीर रोशनसिंह को प्रयाग में फाँसी दी गई। आज उस स्थान पर जवाहरलाल जी की माता के नाम मर मेडिकल कालेज है। इनके शव की शोभायात्रा निकालने की अनुमति तो न मिली, परन्तु उसी पुस्तक में यह लिखा है कि इनका अन्तिम संस्कार आर्यसामाजिक रीति से किया गया।

इनके अन्तिम संस्कार की एक कहानी है। इनका सुपुत्र महाविद्यालय ज्वालापुर में पढ़ता था। वह प्रयाग पहुँचा। वहाँ आर्यसमाज चौक प्रयाग में आया और कहा कि मेरे पिताजी का अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से ही होगा। संस्कार कौन कराएगा? नगर में दमनचक्र चल रहा था तथापि श्री विश्वप्रकाशजी (पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्यायजी के द्वितीय सुपुत्र) ने कहा, ''मैं चलता हूँ। मैं कराऊँगा।''

विश्वप्रकाशजी ने 1971 ई. में हमें सगर्व बताया था कि रक्तसाक्षी श्री रोशनसिंह का अन्तिम संस्कार मैंने करावाया था।

उसी अलभ्य पुस्तक में लिखा है कि ठाकुरजी 'ओ३म्' शब्द का उच्चारण करते हुए हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गये।

पाठकवृन्द! जब लोग क्रान्तिकारियों के शव के समीप भी नहीं फटकते थे, उस युग में यह क्या कोई साधारण-सी बात थी कि दिलजले आर्यवीर बड़े जोश से संस्कारविधि हाथ में लिये उनके अन्तिम संस्कार कराने को पहुँच जाते थे।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 18 मार्च, 2019 से रविवार 24 मार्च, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21-22 मार्च, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 मार्च, 2019

प्रथम पृष्ठ का शेष

को मीडिया के माध्यम से लेकर अन्य आधुनिक तरीके से प्रचार-प्रसार में सहयोग के साथ तथा अन्य बड़े आयोजनों में जिस तरह आपका आशीर्वाद मिलता है उससे आर्यजनों में एक अनूठे उत्साह का संचार होता है।

जिस तरह आपने देश के आदिवासी आंचलों से लेकर पूर्वोत्तर भारत के वनवासी समाज में स्कूलों के माध्यम से स्वामी दयानन्द सरस्वती जी, वैदिक कार्यों को तथा वहां मरणसन्न हालत में वैदिक धर्म को पुन: एक संजीवनी प्रदान की ऐसा महान कार्य निश्चित ही एक महान आत्मा कर सकती है।

पुन: समस्त आर्य जगत की ओर से पद्मभूषण आर्य रत्न महाशय धर्मपाल जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकानाएं।

प्रतिष्ठा में,

पद्म पुरस्कार प्राप्त करने के उपरान्त राष्ट्रपति भवन में भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी, प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी के साथ बाएं से दाएं सर्वश्री बी.के. शुगलू, शंकर लिंगम नम्बी नारायण, दर्शनलाल जैन, अनिल कुमार मनिभाई नाईक, एस.जे. शंकर, सुश्री तीजन बाई, आर्य रत्न महाशय धर्मपाल जी, श्री अशोक लक्ष्मणराव कुकड़े एवं सुश्री बछेन्द्री पाल।

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

मो. 9540040339

आओ जानें ! सत्य? असत्य?

आओ पढ़ें !

सत्यार्थ प्रकाश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह